International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-09-2021, Accepted: 13-10-2021, Published: 28-10-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 103-107

हिंदी साहित्य में किसान विमर्श

शर्मिला देवी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, भारत

सारांश
भारत देश मे किसान विमर्श एक महत्त्वपूर्ण विषय है। किसानो की समस्याएँ पहले भी विद्यमान थी और वर्तमान मे भी वैसी की वैसी है। हिन्दी साहित्य में किसानो से जुड़े विषयो को अनेक विद्वानो ने अपने साहित्य में उठाया है। किसान, खेत और मजदूर को लेकर यह विमर्श साहित्य में आधुनिक कल से चला आ रहा है। भारतीय किसान का जीवन बहुत ही दरिद्रता, ऋणग्रसत्ता एवं कष्टों से भरा पड़ा है। हिंदी साहित्य में लेखकों ने किसानो के जीवन के प्रत्येक पक्ष को छूने का प्रयत्न किया है। किसानों की स्थिति इतनी दयनीय है कि वह अपने बच्चों को अच्छा भविष्य देने की कल्पना भी नहीं कर सकते ।किसानो की दयनीय स्थिति का वर्णन हिन्दी साहित्य मे हुआ है।

मूल शब्द: खेतिहर मजदूर, बटाईदार, विमर्श, अभिव्यक्ति

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की लगभग 70% आबादी पहले गावों में रहती थी। इन गांवों के लोगों की जीविका का प्रमुख आधार खेती तथा पशुपालन था। किसान अपना खून पसीना बहाकर अनाज पैदा करता है। किसान हम सिर्फ उसी को नहीं कहते जिसके पास भूमि है अपितु वे लोग भी किसान हैं जिनके पास भूमि नहीं है। लेकिन फिर भी खेती करते हैं। खेतिहर मजदूर, पट्टेदार, बटाईदार, चरवाहे आदि भूमिहीन किसानों में ही आते हैं। हिंदी साहित्य में अनेक विमर्श है जैसे- दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, पर्यावरण विमर्श आदि। उसी प्रकार इन सब विमर्शों के अतिरिक्त किसान विमर्श भी महत्वपूर्ण है। हिंदी साहित्य में अनेक विद्वानों ने विविध विधाओं के माध्यम से किसान विमर्श का वर्णन किया है। किसान, खेत और मजदूर को लेकर यह विमर्श साहित्य में एक नई पहल की ओर संकेत है। किसान अन्नदाता है। वह खेत में अन्न उपजाता है। जिससे देश के करोड़ों लोगों का भरण-पोषण होता है। किसान विमर्श पर लिखना किसान के दुख-दर्द, पीड़ा को साहित्य में अभिव्यक्ति देना है।

हिंदी साहित्य में किसान विमर्श

स्वतंत्रता से पूर्व भी हिंदी साहित्य में किसानों की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया और स्वतंत्रतायोत्तर और समकालीन दौर में भी। मुंशी प्रेमचंद जी के साहित्य में हमें किसानों की पीड़ा का चित्रण मिलता है । पंच परमेश्वर, बलिदान, सवा सेर गेहूं, दो बैलों की कथा ,सुजान भक्त, बाबा जी का भोग, पछतावा, पूस की रात, गोदान, कर्मभूमि आदि अनेक रचनाओं में किसानो के जीवन के ज्वलंत विषयों को उठाया गया है। मुंशी

प्रेमचंद का 'गोदान' उपन्यास किसान जीवन का महाकाव्य माना जाता है। इस उपन्यास में लेखक ने किसान जीवन की यथार्थ स्थिति का वर्णन किया है। किसान जीवन की विभिन्न समस्याओं को उजागर करने में यह उपन्यास पूर्णत; सक्षम है। महाजनों एवं साहूकारों की शोषण प्रवृत्ति को इसमे बखूबी देखा जा सकता है । मुंशी प्रेमचंद भोला- होरी के प्रसंग के माध्यम से किसान जीवन की स्थिति से अवगत करवाते हैं।

"कौन कहता है कि तुम आदमी हो? हममे आदमीयत कहां? आदमी वह है- जिसके पास धन है। अख्तियार है। इलम है। हम लोग तो बैल हैं और जुतने के लिए पैदा हुए हैं।"[1]

भारतीय किसान का जीवन बहुत ही दरिद्रता, ऋणग्रसत्ता एवं कष्टों से भरा पड़ा है। महाजनी सभ्यता का जाल अंग्रेजों ने भारत में फैलाया। अकाल, कृषि की पैदावार का कम मूल्य, कर का बोझ आदि । किसानों की दशा दिन प्रतिदिन गिरती जा रही थी। नई व्यवस्था से किसानों को भारी संकटों का सामना करना पड़ा। शिवपूजन सहाय, नागार्जुन, प्रेमचंद, फणीश्वर नाथ रेणु, भैरव प्रसाद गुप्त, संजीव, सुनील चतुर्वेदी, पंकज सुबीर, आदि अनेक ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से किसानो के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

किसान को जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिनमें सबसे प्रमुख समस्या 'कर्ज' की समस्या है । घर के हर छोटे-बड़े काम के लिए किसान को साहूकार के पास जाकर ऋण लेना पड़ता है। उस पर साहूकार मनमर्जी का ब्याज लगाकर किसान को ठगता है। समय पर पैसे ना देने के कारण किसान को अपनी फसल से भी हाथ धोना पड़ता है। हर बार अच्छी फसल की उम्मीद में किसान मेहनत करता है, और अपनी जरूरतों के लिए कर्ज लेता रहता है। कई बार तो अपनी जमीन बेच कर भी वह ऋण से मुक्त नहीं हो पाता। किसान अपनी जिम्मेदारियों से तंग आकर आत्महत्या तक कर लेता है। एक तरफ तो किसान को साहूकार, महाजन चैन की सांस नहीं लेने देते। तो दूसरी तरफ प्राकृतिक आपदाएं जैसे अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, कभी बाढ़ ,कभी अकाल ,कभी जंगली जानवरों द्वारा किसानों की पकी-पकाई फसल को नष्ट कर दिया जाता है। वर्तमान में भी यह सभी समस्याएं किसान को परेशान कर रही है।

किसान के पास इन समस्याओं से बाहर निकलने का कोई रास्ता भी नहीं है । वर्तमान में विभिन्न कंपनियां तथा उनके दलाल किसानों को लुटते रहते हैं। तरह-तरह के लालच देकर किसान को अपनी बातों में फंसा कर उसे लूट लेते हैं।

हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध लेखक शिवपूजन सहाय का उपन्यास 'देहाती दुनिया' किसानों के जीवन का यथार्थ चित्रण करता है। इस उपन्यास में दरोगा और पटवारी द्वारा भोले-भाले" किसानों पर किए जाने वाले शोषण को दर्शाया गया है।

दरोगा जी की किसी पुश्त में दया की खेती नहीं हुई थी।

उनके पिता पटवारी थे। पटवारी भी कैसे,,,,, गरीब की गर्दन पर अपनी कलम रखने वाले । उनकी मार ने विभिन्न प्रकार से किसानों की कमर तोड़ दी थी। कितने बिना नापे बेघर हो गए थे । कितनों का देश छूट गया था। कितनों के मुंह के टुकड़े छिन गए थे। "[2]

हिंदी साहित्य में लेखकों ने किसानो के जीवन के प्रत्येक पक्ष को छूने का प्रयत्न किया है। लेखक ने बताया है, कि जो उच्च वर्ग के लोग हैं वह कैसे निम्न वर्ग के व्यक्ति को परेशान करते हैं। किसानों पर जमीदारों के अत्याचार, ब्याज की दर, भूमि अधिग्रहण, किसानों के अंधविश्वासी जीवन, प्राकृतिक आपदाएं, सरकार की नीति, अभावग्रस्त

जीवन, किसान की बढ़ती आत्महत्यायेँ, पक्की फसल का नष्ट होना, किसान की खत्म होती उम्मीदें इत्यादि सभी प्रसंगों को देखा जा सकता है।

स्वतंत्रता से पहले भी किसान का जीवन समस्याओं से घिरा हुआ था, स्वतंत्रता के बाद भी। परेशानियां वैसी की वैसी ही खड़ी है। शायद यही कारण है कि किसान के बच्चे अपना रुख शहरों की तरफ कर रहे हैं। क्योंकि उनके पूर्वजों ने अपनी जिंदगी खेतों मे खत्म कर दी। उनके जीवन का तो क्या हश्र होगा? इसलिए किसानों के बच्चे शहरों की तरफ भाग रहे हैं या अपनी जमीन बेच कर विदेशों की तरफ। परंतु चिंता का विषय यह है कि अगर सभी लोग नौकरी करेंगे तो किसानी कौन करेगा? हमें खाने के लिए अनाज कहां से मिलेगा? हमारे देश में 'जय जवान जय किसान' के नारे दिए जाते हैं। परंतु न तो जवान के पास अच्छे हथियार हैं और ना किसान के पास उसके हक। किसानों के बच्चे शहरों में जैसे -तैसे अगर पढ़-लिख भी जाए, तो बेरोजगारी इतनी है कि मजबूरन उन्हें गांव वापस आना पड़ता है। कैलाश बनवासी की कहानी 'बाजार में रामधन' में लेखक ने रामधन की कहानी कही है। जिसके पास थोड़ी-सी जमीन है।

जिसके सहारे वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता है। उसके भाई ने 2 साल पहले 12वीं" पास कर ली तथा कॉलेज में इसलिए नहीं पढ़ा क्योंकि बेरोजगारी इतनी है कि पढ़-लिख कर भी नौकरी नहीं मिलती।

> रामधन और उसकी पत्नी मेहनत मजदूरी करके अपना पेट पाल सकते हैं, और पाल रहे हैं लेकिन मुन्ना क्या करें? वह तो गांव का पढ़ा-लिखा नौजवान है । कोई धंधा करने के लिए मुन्ना को पैसे की जरूरत। लेकिन परिवार में बूढ़ी मां, दो बच्चे और एक छोटा भाई मुन्ना।"[3]

किसानों की स्थिति इतनी दयनीय है कि वह अपने बच्चों को अच्छा भविष्य देने की कल्पना भी नहीं कर सकते। बस दो वक्त की रोटी बिना कर्ज के खाते रहें, यह भी मुमकिन नहीं । वर्तमान में 80% किसान ऐसे हैं जिनके सिर कर्ज़ चढ़ा है। किसानों का जीवन ब्याज देने में ही निकल जाता है। अधिकतर साहित्यकारों ने किसानी जीवन को जिया भी है। इसलिए साहित्य में किसानों की दयनीय दशा का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है।

हिंदी साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु ने भी किसान विमर्श पर अपने साहित्य में लिखा है। रेणु ने ग्रामीण जीवन का सजीव चित्रण अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जन-जीवन के सुख-दुख, रहन-सहन, आपसी व्यवहार, तीज-त्योहार इत्यादि का यथार्थ चित्रण रेणु जी ने किया है। 'मैला आंचल' उपन्यास में रेनू ने स्पष्ट किया, कि

> "अनाज के दाम बढ़ने का फायदा बड़े-बड़े व्यापारी, जमीदार तथा साहूकार उठा लेते हैं। और छोटे किसान खलिहान से ही जिस दाम पर जमीदार फसल लेता है उसे बेच देते हैं। ऋण लेने की मजबूरी में उन्हें ऐसा सब कुछ करना पड़ता है । अनाज की ऊंची दर से गांव के तीन व्यक्तियों ने फायदा उठाया है-तहसीलदार ,सिंह जी ने और खिलावन यादव ने । छोटे-छोटे किसानों की जमीनें कोड़ी के मोल बिक रही हैं । मजदूरों को सवा रुपए रोज मजदूरी मिलती है। लेकिन एक आदमी का भी पेट नहीं भरता। 5 साल पहले सिर्फ पांच आने रोज मजदूरी के मिलते थे और उसी से घर भर के लोग खाते थे।[4]“

फणीश्वर नाथ रेणु जी ने अपने उपन्यास के माध्यम से दर्शाया है कि कुछ समय पहले नजराना न देने पर किसानों पर घोर अत्याचार

किये जाते थे। गांव के अधिकतर लोगों का आधार खेती ही था।

जिसके कारण किसानों का निरंतर शोषण हो रहा था।

हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार लेखक ज्ञान चतुर्वेदी ने भारतीय किसान की दीन-हीन अवस्था का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। सचमुच खेतों में अत्यधिक कठोर परिश्रम करने के पश्चात भी भारतीय किसान कुछ विशेष उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता। सरकारी अधिकारियों एवं नेताओं की दृष्टि में एक कृषक का कार्य मात्र उत्पन्न करना है। उसका भौतिक सुखों से कोई सरोकार नहीं है। उनकी दृष्टि में किसान को फटे हाल ही रहना चाहिए। अन्यथा पेट भरने पर वे बदमाशी पर उतारू हो जाएंगे।

अधिकारियों की दृष्टि में किसानों को भूखे नंगे हाल में रहकर ही जीवन यापन करना चाहिए। किसानों के शोषण पर विचार व्यक्त करते हुए लेखक ने अपने उपन्यास 'दंगे में मुर्गा' मे लिखा है

> "प्रशासन जानता है कि भरे पेट बदमाशी सुझती है। जब खाली पेट ही किसान इस कदर बदमाशी कर रहा है ,तो पेट भर जाने पर तो ना जाने क्या करेगा। प्रशासन ऐसा अंधेर नहीं होने देगा। देश को भूखा किसान चाहिए । जो खाने की आशा में चुपचाप खेतों में मरता खपता रहे। देश को नंगा किसान चाहिए। जो शर्म से झोपड़ी में ही छुपा रहे।[5]"

ज्ञान चतुर्वेदी ने वर्तमान भारतीय किसान की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है। वह स्थिति सर्वथा यथार्थ प्रतीत होती है।

स्वतंत्रता के लगभग इतने वर्षों बाद भी केंद्र एवं राज्य सरकारों की ओर से किसानों के हित संबंधी विकास कार्य नहीं किए जा रहे। 21वीं सदी में प्रवेश करने के पश्चात भी भारतीय किसान अत्यंत दयनीय दौर से गुजर रहा है। आलोच्य व्यंगकार ज्ञान चतुर्वेदी ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय सरकार एवं प्रशासन का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में किसान विमर्श पर बहुत साहित्य लिखा गया। परंतु किसानों की समस्याओं की ओर किसी सरकार ने ध्यान नहीं दिया । आज आवश्यकता है कि किसान जीवन को केंद्र मे लाकर उनकी समस्याओं का समाधान किया जाए। हिंदी साहित्य में लेखकों ,कवियों को अत्यधिक मात्रा में किसान जीवन पर लेखन कार्य करने की आवश्यकता है। वर्तमान में किसानों के हक जिस तरह दबाए जा रहे हैं। यह अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में पिछले 1 साल से किसान धरने पर बैठे हैं और उनकी मांगे पूरी नहीं की जा रही है । किसान अन्नदाता है। इसलिए 'किसान' भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था का मेरुदंड है। युगांतर में किसान उपेक्षित रहा है। कृषि उद्योग, मानव सभ्यता के आदिकाल से चला आ रहा है, और विश्वव्यापी है।

आज आवश्यकता है ऐसे किसान विमर्श की, जो बुद्धिजीवी वर्ग को तथा सरकार को किसानों की दयनीय दशा से परिचित करवा क, उन्हें किसानों के हक के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करें और किसानों की उन्नति तथा विकास की ओर ध्यान दिया जाए, ताकि किसानों को आत्महत्या ना करनी पड़े और उन्हें अपनी मेहनत का फल मिले।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद, गोदान, भारतीय साहित्य संग्रह; 2014 पृष्ठ-24
2. सहाय, शिवपूजन, देहाती दुनिया, राजकमल प्रकाशन: दिल्ली, 1994, पृष्ठ संख्या 76

3. संपादक, राजेंद्र यादव, 2/36 अंसारी रोड दरियागंज: नई दिल्ली, 110002, अगस्त 2006, पृष्ठ संख्या -68
4. रेणु, फणीश्वर नाथ, मैला आंचल, राजकमल प्रकाशन: दिल्ली ,2009,पृष्ठ संख्या-118
5. चतुर्वेदी, ज्ञान, दंगे मे मुर्गा, राजकमल प्रकाशन: दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या-10